Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Paper

आदिवासी शिक्षा का ऐतिहासिक विकास-झारखंड के संदर्भ मे

माया कुमारी [1*], डॉ. शरधा कुमारी [2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड, भारत

[2] शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापक, वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची झारखंड, भारत

Corresponding Author: * माया कुमारी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21295171

सारांश

झारखंड के आदिवासी समाज में शिक्षा का ऐतिहासिक विकास सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल में आदिवासी समुदायों में औपचारिक शिक्षा व्यवस्था का अभाव था, किंतु उनकी अपनी समृद्ध लोकज्ञान परंपरा, सामुदायिक शिक्षण प्रणाली, प्रकृति आधारित जीवन-दर्शन तथा मौखिक ज्ञान-संप्रेषण की विशिष्ट पद्धति विद्यमान थी। परिवार, समुदाय, अखड़ा, लोकगीत, लोककथाएँ तथा पारंपरिक रीति-रिवाज ही शिक्षा के प्रमुख माध्यम थे। औपनिवेशिक काल में ईसाई मिशनरियों तथा ब्रिटिश प्रशासन द्वारा कुछ विद्यालयों की स्थापना की गई, जिससे औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ हुआ। हालांकि उस समय शिक्षा का लाभ सीमित क्षेत्रों एवं सीमित समुदायों तक ही पहुँच सका।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान ने अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास को विशेष संरक्षण प्रदान किया। संविधान के अनुच्छेद *46*, आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाओं, आश्रम विद्यालयों तथा जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से आदिवासी शिक्षा के विस्तार के लिए अनेक प्रयास किए गए। वर्ष *2000* में झारखंड राज्य के गठन के बाद जनजातीय शिक्षा को नई प्राथमिकता मिली। विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, छात्रावासों की स्थापना, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, समग्र शिक्षा अभियान तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–*2020* जैसी पहलों ने शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इसके बावजूद आदिवासी शिक्षा अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। आर्थिक विषमता, भौगोलिक दुर्गमता, मातृभाषा एवं शिक्षण भाषा का अंतर, विद्यालयी अवसंरचना की कमी, डिजिटल असमानता तथा सामाजिक जागरूकता का सीमित स्तर अभी भी शिक्षा के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि शिक्षा ने झारखंड के आदिवासी समाज में सामाजिक चेतना, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा लोकतांत्रिक सहभागिता को नई दिशा प्रदान की है। अतः आदिवासी शिक्षा का ऐतिहासिक विकास केवल शैक्षिक परिवर्तन की कहानी नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संरक्षण तथा समावेशी विकास की सतत प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अध्याय है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584- 184X
- ✓ **Received:** 12-10-2025
- ✓ **Accepted:** 28-11-2025
- ✓ **Published:** 30-12-2025
- ✓ **MRR:3(12):**2025;175-180
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite this Article

माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. आदिवासी शिक्षा का ऐतिहासिक विकास-झारखंड के संदर्भ मे. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(12):175-180.

मुख्य शब्द : आदिवासी शिक्षा, झारखंड, ऐतिहासिक विकास, जनजातीय समाज, पारंपरिक शिक्षा, लोकज्ञान, औपनिवेशिक शिक्षा, मिशनरी विद्यालय, संवैधानिक संरक्षण, अनुसूचित जनजाति, समग्र शिक्षा, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, छात्रवृत्ति, मातृभाषा आधारित शिक्षा, शैक्षिक विकास, सामाजिक परिवर्तन, महिला शिक्षा, समावेशी शिक्षा, सतत विकास।.

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति, सांस्कृतिक निरंतरता तथा सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम मानी जाती है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा लोकतांत्रिक सहभागिता का आधार भी है। किसी भी समाज की उन्नति का स्तर उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता एवं व्यापकता से निर्धारित होता है। भारत जैसे बहुजातीय, बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यहाँ विभिन्न समुदायों की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, जीवन-पद्धति तथा ज्ञान परंपराएँ विद्यमान हैं। इन समुदायों में अनुसूचित जनजातियों का विशेष स्थान है, जिन्होंने सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का विकास किया है।

झारखंड भारत का एक प्रमुख जनजातीय राज्य है। यहाँ संथाल, मुंडा, उराँव, हो, खड़िया, बिरहोर, असुर, पहाड़िया, भूमिज, लोहरा, करमाली, चेरो तथा अनेक अन्य जनजातियाँ निवास करती हैं। इन समुदायों का सामाजिक जीवन प्रकृति, सामुदायिक सहयोग, श्रम, पारंपरिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित रहा है। लंबे समय तक इनकी शिक्षा व्यवस्था औपचारिक विद्यालयों पर आधारित न होकर जीवन के व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित थी। परिवार, गाँव, अखड़ा, पर्व-त्योहार, लोकगीत, लोककथाएँ, सामुदायिक श्रम तथा पारंपरिक रीति-रिवाज ही इनके प्रमुख शैक्षणिक संस्थान थे।

आधुनिक शिक्षा के आगमन के साथ आदिवासी समाज की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन प्रारंभ हुआ। औपनिवेशिक शासन, मिशनरी गतिविधियाँ, स्वतंत्रता आंदोलन, संवैधानिक प्रावधान तथा स्वतंत्र भारत की शिक्षा नीतियों ने जनजातीय शिक्षा के स्वरूप को नई दिशा प्रदान की। झारखंड राज्य के गठन के पश्चात शिक्षा को विकास का प्रमुख आधार मानते हुए अनेक योजनाएँ लागू की गईं, जिनके परिणामस्वरूप विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक जनजातीय समुदायों की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं, जिनका समाधान समावेशी एवं संवेदनशील नीतियों के माध्यम से ही संभव है।

आदिवासी शिक्षा की अवधारणा

आदिवासी शिक्षा का आशय केवल विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्राप्त औपचारिक शिक्षा से नहीं है। इसका व्यापक अर्थ उस संपूर्ण ज्ञान प्रणाली से है जिसके माध्यम से आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति, भाषा, परंपराएँ, सामाजिक मूल्य, प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की विधियाँ तथा जीवन कौशल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करते हैं। जनजातीय समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं था, बल्कि जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालना, सामुदायिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करना तथा सामाजिक संतुलन बनाए रखना भी था।

आदिवासी समाज की पारंपरिक शिक्षा अनुभवात्मक थी। बच्चे खेतों, जंगलों, नदी-नालों, पर्व-त्योहारों तथा सामुदायिक आयोजनों के माध्यम से सीखते थे। वे अपने माता-पिता एवं समुदाय के बुजुर्गों से कृषि, शिकार, मत्स्य पालन, औषधीय पौधों की पहचान, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य तथा सामाजिक आचार-विचार का ज्ञान प्राप्त करते थे। इस शिक्षा का उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि समुदाय का जिम्मेदार सदस्य बनाना था।

आज शिक्षा की अवधारणा व्यापक हो चुकी है। आधुनिक शिक्षा विज्ञान, तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, प्रबंधन तथा वैश्विक ज्ञान से जुड़ी हुई है। इसलिए आदिवासी शिक्षा का आधुनिक स्वरूप पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर आधारित होना चाहिए। यदि शिक्षा स्थानीय संस्कृति एवं भाषा से जुड़ी रहे, तो उसका प्रभाव अधिक स्थायी एवं व्यापक होता है।

प्राचीन एवं पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था

झारखंड के आदिवासी समाज में शिक्षा का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। यद्यपि यहाँ गुरुकुल अथवा आधुनिक विद्यालय जैसी संस्थाएँ नहीं थीं, फिर भी शिक्षा का एक सुव्यवस्थित सामाजिक ढाँचा विद्यमान था। परिवार शिक्षा की प्रथम इकाई था, जहाँ बच्चों को जीवन के मूलभूत मूल्य सिखाए जाते थे। माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य बच्चों को श्रम, अनुशासन, सहयोग, प्रकृति संरक्षण तथा सामुदायिक जीवन का महत्व समझाते थे।

ग्राम समुदाय शिक्षा का दूसरा प्रमुख केंद्र था। प्रत्येक गाँव में सामुदायिक जीवन की अपनी परंपराएँ थीं। गाँव के बुजुर्ग, पारंपरिक मुखिया तथा धार्मिक नेता युवाओं को सामाजिक नियमों, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित कराते थे। यह शिक्षा व्यवहारिक एवं अनुभवजन्य होती थी।

जनजातीय समाज में **अखड़ा** का विशेष महत्व था। अखड़ा केवल नृत्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का स्थान नहीं था, बल्कि यह युवाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रशिक्षण का केंद्र भी था। यहाँ युवाओं को लोकनृत्य, लोकसंगीत, पारंपरिक वाद्ययंत्र, सामुदायिक अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रशिक्षण दिया जाता था। अखड़ा सामाजिक शिक्षा का जीवंत संस्थान था।लोककथाएँ, लोकगीत एवं मिथक भी शिक्षा के महत्वपूर्ण माध्यम थे। इनके माध्यम से बच्चों को नैतिकता, साहस, ईमानदारी, प्रकृति प्रेम तथा सामुदायिक जीवन के आदर्शों का ज्ञान प्राप्त होता था। मौखिक परंपरा के कारण ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रहता था। यह शिक्षा पुस्तकों पर आधारित नहीं थी, बल्कि जीवन के अनुभवों एवं सामुदायिक स्मृति पर आधारित थी।पारंपरिक शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्व दिया जाता था। बच्चे बचपन से ही वृक्षों, जलस्रोतों, वन्यजीवों तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व को सीखते थे। वे यह समझते थे कि प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। आज जब पर्यावरण संरक्षण वैश्विक चिंता का विषय है, तब जनजातीय समाज की यह ज्ञान परंपरा और अधिक प्रासंगिक हो गई है।

औपनिवेशिक काल में आदिवासी शिक्षा

अंग्रेजों के आगमन के साथ झारखंड की शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रारंभ हुए। औपनिवेशिक शासन का उद्देश्य आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था के लिए शिक्षित मानव संसाधन तैयार करना था। दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना भी था। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप झारखंड के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में औपचारिक विद्यालयों की स्थापना प्रारंभ हुई।मिशनरी विद्यालयों ने जनजातीय

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शिक्षा के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होंने दूरस्थ क्षेत्रों में विद्यालय स्थापित किए, स्थानीय बच्चों को पढ़ने-लिखने का अवसर प्रदान किया तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति भी जागरूकता उत्पन्न की। कुछ मिशनरियों ने स्थानीय भाषाओं के अध्ययन एवं लिप्यंतरण का कार्य भी किया, जिससे जनजातीय भाषाओं के संरक्षण में सहायता मिली।

फिर भी औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था की अपनी सीमाएँ थीं। शिक्षा का विस्तार सभी क्षेत्रों तक समान रूप से नहीं हो सका। अधिकांश विद्यालय नगरों अथवा मिशन केंद्रों के आसपास ही स्थापित हुए। दूरस्थ वन क्षेत्रों में रहने वाले अनेक समुदाय इस व्यवस्था से बाहर ही रहे। आर्थिक कठिनाइयाँ, संचार व्यवस्था का अभाव तथा सामाजिक दूरी भी शिक्षा के प्रसार में बाधक बनी रही।औपनिवेशिक शासन के दौरान शिक्षा का पाठ्यक्रम मुख्यतः पश्चिमी ज्ञान प्रणाली पर आधारित था। इसमें स्थानीय इतिहास, जनजातीय संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान एवं मातृभाषाओं को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। परिणामस्वरूप अनेक जनजातीय परिवार आधुनिक शिक्षा को अपने सामाजिक जीवन से अलग मानते थे। इसके बावजूद यह स्वीकार करना होगा कि इसी काल में औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ हुआ, जिसने आगे चलकर स्वतंत्र भारत की शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला तैयार की।

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में कुछ शिक्षित जनजातीय युवाओं ने सामाजिक जागरूकता एवं अधिकार चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा के माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधार, संगठन निर्माण तथा अपने अधिकारों के प्रति जनजातीय समाज को जागरूक करने का कार्य किया। यही प्रक्रिया आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन तथा जनजातीय सामाजिक आंदोलनों में भी दिखाई देती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि झारखंड में आदिवासी शिक्षा का ऐतिहासिक विकास पारंपरिक ज्ञान प्रणाली से प्रारंभ होकर औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था तक एक लंबी सामाजिक यात्रा का परिणाम है। इस यात्रा ने आधुनिक शिक्षा के लिए आधार तैयार किया, किंतु साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा तभी प्रभावी होगी जब वह स्थानीय संस्कृति, भाषा तथा समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित की जाए।

स्वतंत्रता के पश्चात आदिवासी शिक्षा का विकास

वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ देश के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास की नई यात्रा प्रारंभ हुई। स्वतंत्र भारत के नीति-निर्माताओं ने यह अनुभव किया कि जब तक समाज के वंचित एवं पिछड़े वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जनजातियों को शिक्षा की मुख्यधारा से नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक राष्ट्रीय विकास का लक्ष्य पूर्ण नहीं हो सकेगा। इसी विचार के आधार पर भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास को विशेष महत्व प्रदान किया गया। संविधान के नीति-निर्देशक तत्वों के अंतर्गत अनुच्छेद 46 में राज्य को यह दायित्व सौंपा गया कि वह अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक तथा आर्थिक हितों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करेगा तथा उन्हें सामाजिक अन्याय एवं शोषण से सुरक्षित रखेगा।

संवैधानिक संरक्षण के फलस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना, छात्रवृत्ति योजनाएँ, निःशुल्क शिक्षा, छात्रावास, पाठ्यपुस्तकों का वितरण तथा शिक्षकों की नियुक्ति जैसे अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किए गए। प्रारंभिक वर्षों में इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय बच्चों को विद्यालयों तक पहुँचाना तथा साक्षरता दर में वृद्धि करना था। यद्यपि इन प्रयासों के परिणाम तत्काल व्यापक रूप से दिखाई नहीं दिए, फिर भी इन्होंने जनजातीय शिक्षा के विकास की आधारशिला तैयार की।

पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भी जनजातीय शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया। प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार पर बल दिया गया, जबकि बाद की योजनाओं में माध्यमिक, तकनीकी तथा उच्च शिक्षा तक जनजातीय विद्यार्थियों की पहुँच बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किए गए। धीरे-धीरे यह समझ विकसित हुई कि केवल विद्यालय खोल देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रशिक्षित शिक्षक, स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थियों के लिए आर्थिक सहायता भी आवश्यक है।

झारखंड राज्य गठन और शिक्षा का नया चरण

15 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य के गठन के साथ जनजातीय विकास एवं शिक्षा को नई दिशा मिली। पृथक राज्य बनने के बाद सरकार ने यह स्वीकार किया कि झारखंड की सामाजिक संरचना एवं विकास की आवश्यकताएँ अन्य राज्यों से भिन्न हैं। इसलिए शिक्षा नीति में जनजातीय क्षेत्रों की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अनेक योजनाएँ लागू की गईं।राज्य गठन के बाद प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों में नए विद्यालय स्थापित किए गए तथा विद्यालय भवनों का निर्माण कराया गया। अनेक विद्यालयों में अतिरिक्त कक्षाएँ, पेयजल, शौचालय तथा अन्य आधारभूत सुविधाएँ विकसित की गईं। इन प्रयासों का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यालयी नामांकन पर दिखाई दिया और पहले की तुलना में अधिक बच्चे विद्यालयों से जुड़ने लगे।

झारखंड सरकार ने बालिका शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की स्थापना, छात्रावासों का निर्माण, साइकिल वितरण योजना तथा छात्रवृत्ति कार्यक्रमों ने ग्रामीण एवं जनजातीय बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पहले जहाँ अनेक बालिकाएँ प्राथमिक शिक्षा के बाद विद्यालय छोड़ देती थीं, वहीं अब माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा तक उनकी पहुँच लगातार बढ़ रही है।

सरकारी योजनाओं की भूमिका

आदिवासी शिक्षा के विकास में केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। **समग्र शिक्षा अभियान** ने विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने, आधारभूत सुविधाओं का विकास करने तथा समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य किया। इस अभियान के माध्यम से विद्यालय भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, डिजिटल शिक्षा तथा शिक्षक प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल है। इन विद्यालयों का उद्देश्य दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण आवासीय शिक्षा उपलब्ध कराना है। आधुनिक शिक्षण व्यवस्था, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर शिक्षा, खेल सुविधाएँ तथा अनुशासित वातावरण के कारण इन

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

विद्यालयों ने अनेक विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया है।
आश्रम विद्यालय, प्री-मैट्रिक एवं पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति, मध्याह्न भोजन योजना, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, विद्यालय पोशाक योजना तथा छात्रावास योजनाओं ने भी जनजातीय शिक्षा के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन योजनाओं के कारण आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा अपेक्षाकृत अधिक सुलभ हुई है।

वर्तमान शैक्षिक स्थिति

आज झारखंड के आदिवासी समाज में शिक्षा की स्थिति पहले की तुलना में काफी बेहतर हुई है। विद्यालयी नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा साक्षरता दर में निरंतर सुधार देखा जा रहा है। प्राथमिक स्तर पर अधिकांश बच्चे विद्यालयों में प्रवेश प्राप्त कर रहे हैं तथा माध्यमिक स्तर तक पहुँचने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ी है।
उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। राँची, दुमका, हजारीबाग, जमशेदपुर, धनबाद तथा अन्य शहरों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में बड़ी संख्या में जनजातीय विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। वे कला, विज्ञान, वाणिज्य, चिकित्सा, अभियंत्रण, कृषि, नर्सिंग, विधि, प्रबंधन तथा शोध के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। अनेक विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रशासनिक सेवाओं, बैंकिंग, न्यायपालिका तथा शिक्षण क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं।
महिला शिक्षा के क्षेत्र में भी सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। आज जनजातीय छात्राएँ विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक उल्लेखनीय संख्या में अध्ययन कर रही हैं। शिक्षा ने उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता का विकास किया है। वे स्वयं सहायता समूहों, सामाजिक संगठनों, सरकारी सेवाओं तथा उद्यमिता के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा ने झारखंड के आदिवासी समाज में केवल साक्षरता नहीं बढ़ाई, बल्कि सामाजिक चेतना का भी विकास किया है। शिक्षित युवाओं ने स्वास्थ्य, स्वच्छता, महिला अधिकार, बाल विवाह, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण तथा लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे विषयों पर समाज को जागरूक किया है। परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं।
शिक्षा के कारण रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध हुए हैं। पहले जहाँ अधिकांश लोग केवल कृषि एवं पारंपरिक व्यवसायों पर निर्भर थे, वहीं अब शिक्षित युवा प्रशासन, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, उद्योग तथा निजी क्षेत्र में भी कार्य कर रहे हैं। इससे परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा समाज में शिक्षा के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है।
शिक्षा ने महिलाओं की स्थिति में भी उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। शिक्षित महिलाएँ अब परिवार एवं समाज के निर्णयों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। वे अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक विकास के प्रति अधिक जागरूक हैं। इससे अगली पीढ़ी की शिक्षा पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
साथ ही, जनजातीय संस्कृति के संरक्षण में भी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में जनजातीय भाषाओं, लोकसाहित्य, इतिहास तथा सांस्कृतिक परंपराओं पर अनुसंधान किया जा रहा है। इससे जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को नई मान्यता प्राप्त हुई है तथा उनकी ज्ञान परंपरा को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला है।

आदिवासी शिक्षा की वर्तमान चुनौतियाँ

झारखंड में आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ केवल विद्यालयों की संख्या या शैक्षिक संसाधनों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषाई तथा प्रशासनिक संरचनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक समानता तभी स्थापित हो सकती है जब इन चुनौतियों का समग्र एवं संवेदनशील समाधान किया जाए।
सबसे प्रमुख चुनौती आर्थिक विषमता है। झारखंड के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि, वनोपज संग्रह, दिहाड़ी मजदूरी तथा असंगठित क्षेत्र के कार्यों पर निर्भर हैं। सीमित आय के कारण अनेक परिवार बच्चों की शिक्षा पर निरंतर व्यय करने में सक्षम नहीं हो पाते। यद्यपि सरकार द्वारा छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, विद्यालय पोशाक तथा अन्य सहायता योजनाएँ संचालित की जाती हैं, फिर भी उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, तकनीकी शिक्षा तथा डिजिटल संसाधनों का व्यय अनेक परिवारों के लिए कठिन बना रहता है।
भौगोलिक परिस्थितियाँ भी एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती हैं। झारखंड के अनेक जनजातीय गाँव घने जंगलों, पहाड़ी क्षेत्रों तथा दुर्गम स्थानों में स्थित हैं। कई स्थानों पर विद्यालयों तक पहुँचने के लिए विद्यार्थियों को प्रतिदिन लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। वर्षा ऋतु में सड़क एवं परिवहन व्यवस्था प्रभावित होने के कारण बच्चों की नियमित उपस्थिति भी प्रभावित होती है। विशेष रूप से माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों की दूरी अनेक विद्यार्थियों के लिए शिक्षा जारी रखने में बाधा बन जाती है।
भाषा भी आदिवासी शिक्षा की एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अधिकांश जनजातीय बच्चे अपनी मातृभाषा—जैसे संथाली, मुंडारी, कुड़ुख, हो या खड़िया—के माध्यम से जीवन की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, जबकि विद्यालयों में शिक्षण मुख्यतः हिंदी या अंग्रेज़ी में होता है। इस भाषाई अंतर के कारण प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है। कई बार वे विषय को समझने के बजाय भाषा को समझने में ही अधिक समय लगाते हैं, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है। मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा इस समस्या के समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपाय हो सकती है।

डिजिटल शिक्षा और नई संभावनाएँ

इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। डिजिटल तकनीक ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को अधिक व्यापक एवं सुलभ बनाया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-पुस्तकें, डिजिटल पुस्तकालय, आभासी प्रयोगशालाएँ तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण प्रणाली शिक्षा के नए आयाम प्रस्तुत कर रही हैं। किंतु झारखंड के अनेक जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अभी भी सीमित है।
इंटरनेट कनेक्टिविटी, बिजली की नियमित आपूर्ति, कंप्यूटर एवं स्मार्ट उपकरणों की कमी के कारण अनेक विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा के लाभ

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से वंचित रह जाते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान यह स्थिति विशेष रूप से स्पष्ट हुई, जब बड़ी संख्या में ग्रामीण एवं जनजातीय विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से प्रभावी रूप से नहीं जुड़ सके। इसलिए डिजिटल अवसंरचना का विकास भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है।

यदि प्रत्येक जनजातीय विद्यालय में इंटरनेट सुविधा, स्मार्ट कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय तथा स्थानीय भाषाओं में ई-शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाए, तो शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थी भी देश के श्रेष्ठ शिक्षकों एवं शैक्षिक संसाधनों से जुड़ सकते हैं।

उच्च शिक्षा और कौशल विकास

आज का समय केवल डिग्री प्राप्त करने का नहीं, बल्कि कौशल आधारित शिक्षा का है। बदलती अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर उन युवाओं के लिए अधिक उपलब्ध हैं जो तकनीकी, व्यावसायिक एवं डिजिटल कौशल से युक्त हों। इसलिए जनजातीय शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं के साथ-साथ आधुनिक रोजगार बाजार की मांगों से भी जोड़ना आवश्यक है।

झारखंड प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध राज्य है। यहाँ कृषि, वानिकी, खनन, पर्यावरण प्रबंधन, पर्यटन, हस्तशिल्प, सूचना प्रौद्योगिकी तथा लघु उद्योगों के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ हैं। यदि उच्च शिक्षा संस्थानों में इन क्षेत्रों से संबंधित रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ, तो जनजातीय युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। इससे पलायन में कमी आएगी तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी।

भविष्य की संभावनाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने जनजातीय शिक्षा के विकास के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। इस नीति में मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षण, समावेशी शिक्षा, कौशल विकास, अनुसंधान, डिजिटल शिक्षा तथा स्थानीय ज्ञान प्रणाली को विशेष महत्व दिया गया है। यदि इन प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो झारखंड में आदिवासी शिक्षा की गुणवत्ता एवं पहुँच दोनों में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

भविष्य में शिक्षा को केवल विद्यालयी पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर स्थानीय संस्कृति, पर्यावरणीय ज्ञान, पारंपरिक कृषि, लोककला, हस्तशिल्प तथा सामुदायिक जीवन से जोड़ना होगा। इससे विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति सम्मान बना रहेगा तथा आधुनिक शिक्षा भी अधिक प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

उच्च शिक्षा संस्थानों में जनजातीय अध्ययन केंद्रों का विस्तार, स्थानीय भाषाओं पर अनुसंधान, पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण तथा जनजातीय इतिहास के अकादमिक अध्ययन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे न केवल ज्ञान का विस्तार होगा, बल्कि जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा।

सुझाव

आदिवासी शिक्षा के समग्र विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव महत्वपूर्ण हो सकते हैं—

- जनजातीय बहुल क्षेत्रों में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा आधारित शिक्षण को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।
- स्थानीय भाषाओं का ज्ञान रखने वाले शिक्षकों की नियुक्ति को प्राथमिकता दी जाए।
- छात्रवृत्ति योजनाओं का समयबद्ध एवं पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।
- छात्रावासों, विशेषकर बालिका छात्रावासों की संख्या बढ़ाई जाए।
- प्रत्येक विद्यालय में डिजिटल शिक्षा की आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- जनजातीय विद्यार्थियों के लिए करियर परामर्श एवं प्रतियोगी परीक्षा मार्गदर्शन केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- उच्च शिक्षा को कौशल विकास, उद्यमिता तथा स्थानीय रोजगार से जोड़ा जाए।
- जनजातीय संस्कृति, लोकज्ञान एवं पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया जाए।
- शिक्षा के क्षेत्र में ग्राम सभा, अभिभावकों एवं स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

निष्कर्ष

झारखंड में आदिवासी शिक्षा का इतिहास परंपरागत सामुदायिक ज्ञान प्रणाली से आधुनिक औपचारिक शिक्षा तक की एक लंबी एवं संघर्षपूर्ण यात्रा का इतिहास है। प्रारंभिक काल में जहाँ शिक्षा परिवार, समुदाय तथा प्रकृति के माध्यम से संचालित होती थी, वहीं औपनिवेशिक काल में औपचारिक विद्यालयी शिक्षा का प्रारंभ हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक संरक्षण, पंचवर्षीय योजनाएँ, आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाएँ तथा जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों ने शिक्षा के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 2000 में झारखंड राज्य के गठन के बाद शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए, जिनके परिणामस्वरूप विद्यालयी नामांकन, साक्षरता, महिला शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में जनजातीय भागीदारी में निरंतर वृद्धि हुई है।

फिर भी यह स्वीकार करना आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी आर्थिक असमानता, भौगोलिक विषमता, भाषाई बाधाएँ, डिजिटल विभाजन तथा गुणवत्तापूर्ण संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, बल्कि समाज, शैक्षणिक संस्थानों, स्थानीय समुदाय तथा नीति-निर्माताओं के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है।

वर्तमान समय की आवश्यकता ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करने की है जो आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी दक्षता एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ जनजातीय समाज की भाषा, संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन मूल्यों का भी सम्मान करे। ऐसी समावेशी एवं संवेदनशील शिक्षा व्यवस्था ही झारखंड के आदिवासी समाज को सामाजिक न्याय, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक संरक्षण तथा सतत विकास की दिशा में आगे ले जा सकती है। इस प्रकार आदिवासी शिक्षा का ऐतिहासिक विकास केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि भविष्य के समावेशी भारत के निर्माण की आधारशिला भी है।

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ सूची

1. आहूजा R. भारतीय समाज. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2021.
2. आहूजा R. सामाजिक अनुसंधान. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2020.
3. दुबे S. भारतीय जनजातियाँ. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास; 2019.
4. दुबे S. मानव और संस्कृति. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2018.
5. सिंह Y. भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स; 2017.
6. शर्मा SR. भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2019.
7. भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 माया कुमारी, डॉ. शरधा कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/